International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 02(I), April - June, 2024, pp. 41-47

उच्च शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण महिला सशक्तीकरण का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. करूणाकर सिंह*
रिंकू मीना**

सार

भारत गांवों का देश है, और भारतीय महिलाओं को देवी के रूप में माना जाता है, लेकिन उनकी वर्तमान स्थिति हर तरह से बहुत खराब है। वे जन्म से ही समस्याओं से जूझ रही हैं। परंपराएं और रीति–रिवाज भी महिलाओं के खिलाफ हैं। कई एनजीओ और सरकारें उनके जीवन के उत्थान के लिए प्रयास कर रही हैं, लेकिन ये प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। उच्च शिक्षा उनके विकास और सशक्तीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा है। फिर भी, तथ्य यह है कि हमारा देश दुनिया में सबसे अधिक निरक्षर लोगों का घर है। भारत की लगभग एक–तिहाई आबादी वर्तमान में कार्यात्मक रूप से निरक्षर है, और पूरी वयस्क महिला आबादी का लगभग 50 प्रतिशत पढ़ या लिख नहीं सकती है। निरक्षरता की दर विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से महिलाओं में अधिक है। महिलाओं की उच्च शिक्षा किसी भी देश के बड़े पैमाने पर सफल विकास के लिए महत्वपूर्ण है। भारत में, हालांकि उच्च शिक्षा के संदर्भ में लैंगिक समानता पर बहुत जोर दिया जा रहा है, शिक्षा तक पहुंच में भेदभाव मौजूद है। महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा तक पहुंच में ग्रामीण और शहरी विभाजन है। इस पत्र में इन सभी समस्याओं पर चर्चा की गई है और इनसे निपटने के लिए उपयुक्त सुझाव दिए गए हैं।

शब्दकोशः *महिला, शिक्षा, अधिकारिता, ग्रामीण, सतत विकास।*

प्रस्तावना

शिक्षा अपने सामान्य अर्थ में सीखने का एक रूप है जिसमें लोगों के समूह के ज्ञान, कौशल और आदतों को शिक्षण, प्रशिक्षण या अनुसंधान के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित किया जाता है। शिक्षा को दो भागों में बांटा गया है, जो की औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा है। औपचारिक शिक्षा कौशलों की सीख है जो हम स्कूलों और संस्थानों से प्राप्त करते हैं, जबकि अनौपचारिक शिक्षा वह सीख है जो दैनिक जीवन में चलती है जो स्वाभाविक रूप से लोगों ने अपने रिश्तेदारों, समाजों और दोस्तों से सीखा होता है। दूसरी ओर व्यक्ति को कुछ विशेष कौशलों के साथ सशक्त बनाने के लिए औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता होती है जो उन्हें समाज में विशिष्ट बनाती है। महिलाएं मानव जाति का लगभग आधा हिस्सा हैं, लेकिन तुलनात्मक रूप से महिलाओं का शिक्षा स्तर पुरुषों की तुलना में कम है। स्वतंत्रता के साठ वर्षों के बाद भी भारत सभी को पूर्ण औपचारिक शिक्षा प्रदान करने से अभी कोसों दूर है। 2005 में, भारत सरकार ने सभी को शिक्षा प्रदान करने के लिए एक अधिनियम पारित किया, और निश्चित रूप से, यह काम कर रहा है और समाज में दिखा रहा है। लेकिन फिर भी महिलाओं की शिक्षा के मामले में कई बाधाएं हैं, इसलिए रोजगार सहित विभिन्न क्षेत्रों में उनकी कमी है।

---

* सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

शहरी महिलाओं की तुलना में ग्रामीण महिलाएं उच्च शिक्षा में कमजोर रहती है परन्तु फिर भी उच्च शिक्षा में पुरुषो से पीछे हैं।

तालिका 1: शिक्षा की जनसांख्यिकीय रूपरेखा

क्र.सं.	शहरी	ग्रामीण
पुरुष	93.79%	86.39%
महिला	79.92%	58.75%

स्रोत:मानव संसाधन विकास मंत्रालय

आरेख 1: शिक्षा की जनसांख्यिकीय रूपरेखा

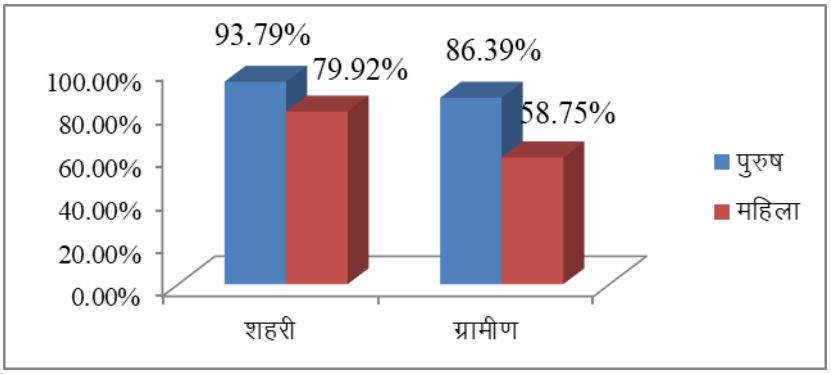

भारत में महिला शिक्षा सरकार और नागरिक समाज दोनों के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय रही है, क्योंकि देश में शिक्षित महिलाओं की संख्या बहुत सीमित है। महिलाएं देश के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, क्योंकि वे आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। लैंगिक असमानता और सामाजिक परंपराओं का महिला शिक्षा पर प्रभाव माना जाता है। वेतन ने महिलाओं की शिक्षा तक पहुंच में बाधा के रूप में कार्य किया, जिसके परिणामस्वरूप गरीबी और देश के पिछड़ेपन में वृद्धि हुई। लड़कियों को शिक्षित करने से महिला सशक्तिकरण सहित कई सामाजिक लाभ होते हैं। वर्तमान में, भारत में महिलाओं को शिक्षा की कमी के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जैसे घरेलू हिंसा, पुरुषों द्वारा क्रूरता, लैंगिक भेदभाव, शक्ति और कार्य के वितरण में भेदभाव, आर्थिक शोषण, यौन शोषण आदि। महिलाओं का सशक्तिकरण, समृद्धि, सामाजिक विकास और सभी तरह से समुदाय का कल्याण। जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं का दमन किया जाता है,उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में सशक्त होने की जरूरत है।

सामाजिक रूप से निर्मित लैंगिक पूर्वाग्रहों के खिलाफ लड़ने के लिए, महिलाओं को उस व्यवस्था के खिलाफ तैरना पड़ता है जिसके लिए अधिक ताकत की आवश्यकता होती है। ऐसी शक्ति सशक्तिकरण की प्रक्रिया से आती है, और यह केवल शिक्षा से आएगी। ग्रामीण क्षेत्र सुविधाओं, आय सृजन, भोजन के वितरण और स्वास्थ्य के मामले में अधिक पिछड़े हुए हैं, इसलिए शिक्षा की बहुत बड़ी आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों का पिछड़ापन केवल पुरुषों और महिलाओं के बीच शिक्षा की कमी के कारण है। किसी तरह समुदाय में महिलाएं खुद को शारीरिक श्रम रोजगार में शामिल करती हैं, लेकिन महिलाएं खुद को किसी भी तरह के आय–सृजन वाले रोजगार में शामिल नहीं करती हैं, इसलिए एक अवलोकन कथन के रूप में यह आसानी से कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण से आता है।

महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाओं पर शिक्षा के प्रभाव का पता लगाना भी है। महिलाओं के सशक्तिकरण में कई चीजें शामिल हैं जो आर्थिक अवसर, सामाजिक समानता और व्यक्तिगत अधिकार है। महिलाओं को उन अधिकारों से वंचित किया जाता है, अक्सर परंपरा के रूप में, ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं को आम तौर पर कोई सार्थक आय सृजन क्षमता नहीं माना

जाता है, और इसलिए उन्हें मुख्य रूप से घरेलू कर्तव्यों और सस्ते श्रम पर छोड़ दिया जाता है। काम करने और अच्छी आय अर्जित करने की शक्ति के बिना, उनकी आवाज को दबा दिया जाता है।

भारत में ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं को समझना कठिन है। अधिकांश गाँवों में स्थायी अर्थव्यवस्थाएँ नहीं हैं और केवल महिलाओं के उत्पीड़न और समाज में जाति व्यवस्था के कारण मौजूद हैं। इस स्थिति में, गैर–सरकारी संगठनों और सरकारी अधिकारियों को महिला शिक्षा का समर्थन करना चाहिए, जो उन्हें उनके लिए बेहतर जीवन दे सकता है। शिक्षा महिला सशक्तिकरण का एक मार्ग है क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का जवाब देने, उनकी पारंपरिक भूमिकाओं का सामना करने और उनके जीवन को बदलने में सक्षम बनाती है।

महिला शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

भारतीय महिलाओं के इतिहास को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है – प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल है। ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1757 से 1947 तक भारत पर शासन किया, जिसे आधुनिक काल कहा जाता है। इस काल में आधुनिक तरीके से पुरुषों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए संस्थान खोले गए लेकिन महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कुछ भी नहीं किया गया। 1858 में ब्रिटिश सरकार ने प्रशासन की सीधी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने इस देश की महिलाओं की शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। सावित्रीबाई फुले ने 1847 में सिर्फ 13 लड़कियों के साथ पहला लड़कियों का स्कूल शुरू किया। बाद में, उन्होंने 1852 में 'अछूत' लड़कियों के लिए एक विशेष स्कूल शुरू किया, निहित स्वार्थों और जातिवादी तत्वों के कड़े विरोध का सामना करते हुए, जो मानते थे कि महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित रखा जाना चाहिए और समाज में उनकी कोई भूमिका या अधिकार नहीं है। 1904 में, एनी बेसेंट ने बनारस में सेंट्रल हिंदू गर्ल्स स्कूल की स्थापना की और प्रो करुए ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पूना में एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। स्वतंत्रता के बाद, भारत की राष्ट्रीय सरकार ने भारत में महिला शिक्षा के विकास के लिए कुछ समितियों और आयोगों की शुरुआत की, यानी राधाकृष्णन कमिश्नर यूनिवर्सिटी। शिक्षा आयोग (1948) श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख समिति (1959), श्रीमती हंसा मेहता समिति (1962), एम. भक्तवत्सलम समिति विशेष रूप से लड़कियों की शिक्षा के लिए ग्रामीण क्षेत्र में और सार्वजनिक निगम, कोठारी आयोग (1964–64), शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति पर संकल्प (1968), की रिपोर्ट के सार्वजनिक समर्थन के कारणों को देखने के लिए भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति (1974), शिक्षा की चुनौती (1985), शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (1986), कार्य योजना (1986), और (1992), आदि। दूसरी ओर, प्राथमिक शिक्षा को विकसित करने के लिए और 6–14 वर्ष की आयु तक प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को हासिल करने के लिए कुछ योजनाएं या कार्यक्रम जैसे ओबीबी, डीपीईपी, एसएसए, एनएलएम, प्राथमिक शिक्षा के पोषण समर्थन का राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीएनएसपीई) या (मिड–डे मील), आरटीई अधिनियम 2009 राष्ट्रीय लक्ष्य यानी शत प्रतिशत साक्षरता हासिल करने के लिए नॉलेज कमीशन आदि की शुरुआत की गई। शिक्षा के इन सरकारी प्रयासों के बावजूद भी महिलाएं पुरुषों की तुलना में पीछे हैं। भारत की महिलाएं आमतौर पर अज्ञानता के कारण अशिक्षित रहती हैं, महिलाएं पुरुष प्रधान समाज की शिकार होती हैं।

साहित्य की समीक्षा

देबाशीष पांडे महिला सशक्तिकरण स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से किया जा सकता है। उन्होंने अपने मामले के अध्ययन में पाया कि – महिलाओं की कम साक्षरता दर और ग्रामीण महिलाओं को शिक्षित करने के विशाल कार्य को देखते हुए एक उपयुक्त रणनीति की योजना बनानी होगी। प्रमुख कार्य उन क्षेत्रों की पहचान करना है जहां ये समूह वास्तव में समस्याओं का सामना कर रहे हैं क्योंकि इस स्तर पर केवल समस्या समाधान वयस्क शिक्षण तकनीक ही इन ग्रामीण गरीबों को अपने काम और आय में सुधार के लिए आकर्षित करेगी। महिला सशक्तिकरण की किसी भी रणनीति की सफलता निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती है जैसे शिक्षा का स्तर, कड़ी मेहनत, सामाजिक प्रथा, परिवार नियोजन, छोटा परिवार, स्वास्थ्य, चिकित्सा सेवाएं, स्वच्छता, पर्यावरण, पेड़ उगाना, है।

डेक्कन हेराल्ड के अनुसार टेलीविजन भारत में महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने में बहुत सहायक है। अपने पत्र ष्द पावर ऑफ टीवी, केबल टेलीविजन एंड वुमन स्टेटस इन इंडियाष् में पाया गया है कि टेलीविजन की शुरुआत का भारतीय समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। यह विशेष रूप से लिंग के मामले में है, क्योंकि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां ग्रामीण दर्शकों का जीवन सबसे लोकप्रिय शो में दर्शाए गए लोगों से बहुत भिन्न होता है। इस तथ्य के आधार पर कि सबसे लोकप्रिय भारतीय धारावाहिक शहरी समायोजन में होते हैं, इन कार्यक्रमों में चित्रित महिलाएं आमतौर पर ग्रामीण महिलाओं की तुलना में बहुत अधिक मुक्त होती हैं।

सेलवन, ए. के अनुसार, उनकी पुस्तक एम्पॉवरिंग वुमेनः एन अल्टरनेटिव स्ट्रैटेजी फ्रॉम रूरल इंडिया में बताया गया है कि महिलाओं की वंचित स्थिति के लिए अधिक महत्वपूर्ण अवरोधक कारक उनकी अज्ञानता, शक्तिहीनता और भेद्यता हैं। उन्होंने सशक्तिकरण की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम के रूप में महिलाओं के व्यवहार में बदलाव लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री मुकुट सोनोवाल के अनुसार आधुनिक शिक्षा और सुविधाओं ने महिला सशक्तिकरण को बहुत प्रभावित किया है। लेकिन शहरी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की तुलना में अभी भी ग्रामीण महिलाएं पीछे हैं। इसके अलावा, इन जगहों पर रहने वाली सामान्य महिलाओं की तुलना में ग्रामीण इलाकों में रहने वाले एससी, एसटी समुदायों की महिलाओं की कमी है। दूसरी तरफ हमने महिला सशक्तिकरण के बिना ग्रामीण विकास के बारे में नहीं सोचा। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, अधिकार और कानूनी आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं की असमानता और भेद्यता में अंतर है। शिक्षा महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के लिए मुख्य बाधा है।

भागवत, एन., और अभ्यंकर, पी. के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय विकास में एक चर के रूप में महिला सशक्तिकरण को मापने के अपने अध्ययन में, महिला सशक्तिकरण को मापने और विश्लेषण करने के लिए सबसे आशाजनक पद्धतिगत दृष्टिकोणों को रेखांकित करने का प्रयास किया। वे अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, और जनसांख्यिकी के क्षेत्र से सशक्तिकरण पर सैद्धांतिक, पद्धतिगत और अनुभवजन्य साहित्य की प्रमुख धाराओं की समीक्षा करते हैं, और जो हम जानते हैं और जो नहीं जानते हैं, उसके बारे में संक्षेप में बताने का प्रयास करते हैं कि महिला सशक्तिकरण क्या होता है, और इसके विकास और गरीबी में कमी के परिणाम क्या हैं। अपने विश्लेषण के आधार पर, वे इस बारे में कुछ ठोस सिफारिशें प्रदान करते हैं कि क्षेत्र सशक्तिकरण को परिभाषित करने, अवधारणा बनाने और मापने में कहां खड़ा है, और मौजूदा ढांचे का उपयोग और परिशोधन करने, डेटा एकत्र करने और विश्लेषण करने और संबंधित साहित्य से दृष्टिकोण को शामिल करने के लिए अगले चरण क्या हो सकते हैं।

ग्रामीण भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति

महिलाएं किसी भी परिवार का केंद्र होती हैं। यह एक स्थापित तथ्य है कि भारत में शहरी और ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक स्थिति में तीन दोष हैं। निरक्षरता, गरीबी और बीमारी अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी चुनौतियां पेश करती हैं और महिलाएं सबसे कमजोर समूहों में से एक हैं। परिस्थितियों के कारण महिलाएं घर पर, समुदाय में और कार्यस्थल पर पारिश्रमिक और गैर–पारिश्रमिक दोनों तरह के काम के माध्यम से अर्थव्यवस्था और गरीबी का मुकाबला करने में योगदान देती हैं।

तालिका 2: अन्य विकासशील देशों की महिलाओं की तुलना में भारतीय महिलाओं की स्थिति

देश नाम	प्रतिशत
संयुक्त राज्य अमेरिका	82.5%
यूनाइटेड किंगडम	74.5%
चीन	58.5%
भारत	43.5%
पाकिस्तान	28%

स्रोतःमानव संसाधन विकास मंत्रालय

आरेख 1: अन्य विकासशील देशों की महिलाओं की तुलना में भारतीय महिलाओं की स्थिति

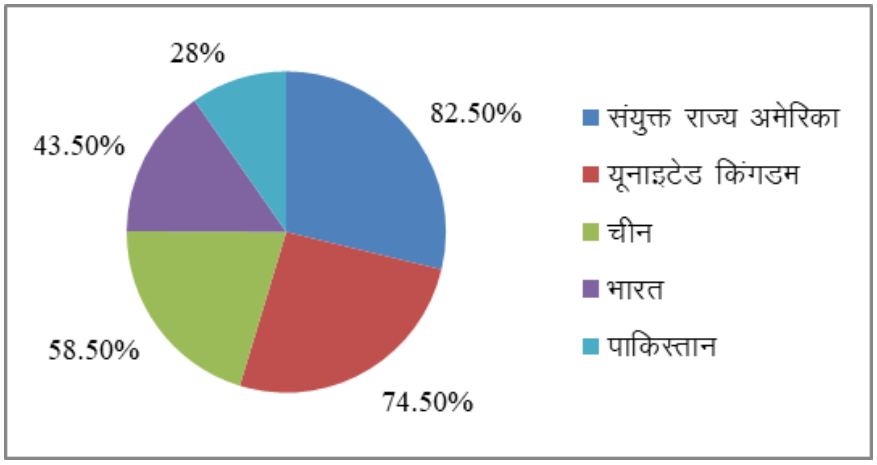

भारत सरकार ने 2008–09 में एक केंद्र प्रायोजित योजना ष्माध्यमिक शिक्षा के लिए लड़कियों को प्रोत्साहनष शुरू की। योजना के अनुसार, पात्र लड़कियों के नाम पर सावधि जमा के रूप में 3,000/– की राशि जमा की जाती है, जो 18 वर्ष की आयु तक पहुंचने पर ब्याज सहित इसे वापस लेने की हकदार होती है और वह पहले से ही 10 वीं कक्षा की परीक्षा पास कर चुकी होनी चाहिए। इस योजना में (i) अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति समुदायों से संबंधित सभी लड़कियां शामिल हैं, जो आठवीं कक्षा पास करती हैं और (ii) कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों से आठवीं परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली सभी लड़कियां (भले ही वे अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति से संबंधित हैं) और सरकार, सरकार में नौवीं कक्षा में सहायता प्राप्त और स्थानीय निकाय स्कूल नामांकित हैं। योजना का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में मुख्य रूप से अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति समुदायों से संबंधित बालिकाओं के नामांकन को बढ़ावा देने के लिए ड्रॉप–आउट को कम करने के लिए एक सक्षम वातावरण स्थापित करना है। योजना के तहत अब तक लगभग 18 लाख बालिकाएं लाभान्वित हो चुकी हैं। वर्ष 2021–22 में अब तक लगभग 6 लाख बालिकाएं लाभान्वित हो चुकी हैं।

महिलाओं की बड़ी भागीदारी और नामांकन सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं को तैयार करने के लिए उच्च शिक्षा विभाग का हमेशा प्रयास रहा है। इसलिए, उच्च शिक्षा में लिंग अंतर को कम करना एक फोकस क्षेत्र है। देश में उच्च शिक्षा में महिला छात्रों के नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। लड़कियों के नामांकन का हिस्सा जो स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर कुल नामांकन का 10 प्रतिशत से कम था, शैक्षणिक वर्ष 2021–22 की शुरुआत में बढ़कर लगभग 55 प्रतिशत हो गया है।

चर्चा और सुझाव

ग्रामीण भारतीय महिलाओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने की चुनौती को देश की जनसांख्यिकी और सांस्कृतिक परंपराओं के संदर्भ में रखा जाना चाहिए। भारत सरकार ने सार्वभौमिक साक्षरता और प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए वीरतापूर्ण प्रयास किए हैं। 1997 में भारत की साक्षरता दर (आयु 5 और ऊपर) 1991 में 52.21 प्रतिशत से बढ़कर 62 प्रतिशत हो गई, लेकिन 1997 की महिला साक्षरता दर सिर्फ 50 प्रतिशत थी और ग्रामीण महिला साक्षरता दर सिर्फ 43 प्रतिशत थी। वयस्क दर (उम्र 15 और ऊपर) कुल 54 प्रतिशत थी, महिलाओं के लिए 40.7 प्रतिशत थी। 1997–98 में माध्यमिक विद्यालयों में कुल नामांकन अभी भी योग्य जनसंख्या का केवल 50 प्रतिशत था, जिसमें प्राथमिक विद्यालय में 44 प्रतिशत लड़कियाँ, मध्य विद्यालय में 40 प्रतिशत और माध्यमिक विद्यालय में 37.1 प्रतिशत थीं। इसलिए उच्च शिक्षा के लिए अर्हता प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत अभी भी कम है, विशेषकर महिला छात्रों के बीच रहा है। दूसरी ओर, 1997–98 तक देश में 229 विश्वविद्यालय, 16 केंद्रीय विश्वविद्यालय और शेष राज्यों द्वारा संचालित हैं। और कुछ 9,274 कॉलेज हैं,

उनमें से 7,199 कॉलेज सामान्य शिक्षा के लिए और 2,075 कॉलेज व्यावसायिक शिक्षा के लिए हैं। साथ में वे लगभग 7 मिलियन छात्रों का नामांकन करते हैं और 331,000 शिक्षकों को रोजगार देते हैं। इसके अलावा, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय आबादी के बड़े हिस्से को लचीला उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करता है, जिनकी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों तक पहुंच नहीं है। 1987 में स्थापित, अब इसमें 47 कार्यक्रम हैं जिनमें 553 पाठ्यक्रम और 1999 शामिल हैं, यह 172,000 से अधिक छात्रों तक पहुंच गया।

भारत में महिला शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए एमएचआरडी की कुछ विचारोत्तेजक विशेषताएं हैं।

लड़कियों के लिए उत्तरदायी शिक्षा प्रणाली	लड़कियों की शिक्षा के लिए सामुदायिक मांग उत्पन्न करना
• स्कूलों तक पहुंच सुनिश्चित करना। • महिला शिक्षकों का अनुपात बढ़ाना। • शिक्षकों की लैंगिक संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण देना। • लैंगिक संवेदनशील और प्रासंगिक पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का विकास करना। • प्रारंभिक बचपन जैसी सहायक संरचनाएं प्रदान करना। • देखभाल और शिक्षा केंद्र बनाना । • वैकल्पिक शिक्षण सुविधाएं प्रदान करना। • स्कूलों में शौचालय और पीने के पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित करना। • लड़कियों की शिक्षा के लिए सामुदायिक मांग पैदा करना।	• माता–पिता और समुदाय की प्रेरणा और लामबंदी करना। • स्कूल से संबंधित गतिविधियों में महिलाओं और माताओं की भूमिका को बढ़ाना। • स्कूल समितियों में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना। • स्कूल, शिक्षकों और समुदाय के बीच संबंधों को मजबूत करना। • लड़कियों की शिक्षा का माता–पिता को विश्वास दिलाना। • स्कूल से संबंधित कार्यक्रमों में लड़कियों को आगे बढ़ाना। • स्कूल समिति सुनिचित करे की सभी बालिकाओ को उनका हक दिलाना। • स्कूल, शिक्षकों और बालिकाओ के माता–पिता के बीच संबंधों को मजबूत करना।

ग्रामीण क्षेत्र में महिला शिक्षा आज की आवश्यकता है। एक बच्चे की पहली और सबसे अच्छी शिक्षक माँ होती है। अगर वह शिक्षित है तो बच्चा कितना अच्छा कर सकता है? वह दुनिया के किसी भी गुरु से बेहतर अपने बच्चे के दिमाग और प्रतिभा का पोषण कर सकती है। शिक्षा एक ऐसी चीज है जो हर जगह मदद करती है और कभी भी समय, प्रयास या धन की बर्बादी नहीं करती है। यह आपको हमेशा वापस भुगतान करेगा। जब शिक्षा ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं तक पहुँचती है तो इससे समाज में मौजूद बुराइयों का उन्मूलन होता है। सबसे अच्छी बात यह है कि लड़की को शिक्षित करने से वह अपना सिर ऊंचा करके जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हो जाती है, वह अपने परिवार का सहारा बन सकती है, और वह दहेज के खिलाफ विरोध कर सकती है, वह घरेलू हिंसा या अकेले रहने की धमकी से कम प्रभावित होती है।

निष्कर्ष

स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। यदि पुरुषों को बाहरी चीजों को संभालने के लिए माना जाता था तो महिलाएं आंतरिक मामलों के लिए अधिक जिम्मेदार थीं। इस धारणा में फर्क सिर्फ इतना है कि आज महिलाएं परदे के पीछे और बाहर की दुनिया में समान रूप से सक्षम हैं। वे अधिक आत्मविश्वासी होते हैं और उन्हें मानव जीवन के हर संभव क्षेत्र में पाया जा सकता है। नाममात्र का गढ़ महिलाओं से अछूता है और यह महिलाओं द्वारा किए गए कदमों का एक अद्भुत संकेत है। शिक्षा एक समग्र एकल चर है, जो विशेष रूप से ग्रामीण भारत में लड़कियों के पक्ष में मोड़ने वाली कई बाधाओं को बदलने की क्षमता रखती है। इसलिए लड़कियों की शिक्षा पर विशेष जोर देना जरूरी है। किशोरियों की शिक्षा कई कारणों से बाधित है, उनमें से सबसे प्रमुख बुनियादी ढांचे और स्कूलों की अनुपलब्धता है। दूसरे, स्कूल पहुँचने में लगने वाला समय, अपराध का डर और अज्ञात घटना बढ़ जाएगी इसलिए विशेष रूप से बालिकाओं के लिए सार्वजनिक परिवहन का प्रावधान आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. देबाशीष पांडे, 2022, भारत में महिला शिक्षा की स्थिति पर एक अध्ययन, ए एनओआरएः नए संगठित अनुसंधान और शिक्षाविदों का युग।
2. उच्च शिक्षा में महिलाएं – अभी लंबा सफर तय करना है / MsDdu gsjkYM https://www-deccanherald-com/opinion/panorama/ women & in & higher & educationth a&long&way& to&go&1009158-html पर उपलब्ध है। एक्सेस किया गया (10 फरवरी 2022)
3. सेलवन, ए. (2017), हायर में ग्रामीण छात्राओं की समस्या शिक्षण संस्थानों के लिए विद्वत्तापूर्ण शोध पत्रिका मानविकी विज्ञान और अंग्रेजी भाषा, खंड–4ध्23।
4. भागवत, एन., और अभ्यंकर, पी. (2016), सतत विकास और भारतीय उच्च शिक्षाः ए. रचनात्मक गठबंधन, इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज के लिए स्कॉलरली रिसर्च जर्नल, 1503–1513।
5. जी, एच., और आर, के.एस. (2015), संतुलित समाज के सतत विकास के लिए महिला शिक्षा की भूमिका, चौथा उच्च शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनः प्रबंधन शिक्षा पर विशेष जोर, (पीपी। 1–6)।
6. मार्टेंस, ए. (2013), सामाजिक मानदंड और आकांक्षाएँः की आयुइ ग्रामीण भारत में विवाह और शिक्षा, विश्व विकास, खंड–47, पृ.1–15।
7. घड़ोलिया एमके स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनानाः दूरस्थ शिक्षा की भूमिका, 2013।
8. मिनिमोल एमसी, माकेश केजी, केरल में ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनानाः स्वयं सहायता समूह की भूमिका पर एक सूडी समाजशास्त्र और नृविज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2012, 4(9):270–280।
9. कांडपाल ई, बालिस के, केयूनिंग एमए शिक्षा और प्रभाव के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनानाः भारतीय महिला समाख्या कार्यक्रम का मूल्यांकन, 2012।
10. सोनोवाल एम., महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का प्रभावः असम के सोनितपुर जिले की अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की एक केस स्टडी, बुनियादी, अनुप्रयुक्त और सामाजिक विज्ञान पर आईसीएईएस का विशेष अंक, 2013, 3।

❖◆❖